ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

# वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 35 | 3 से 9 दिसम्बर, 2015 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 मा. कृ. 08


## आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में सर्वात्मना समर्पित आर्य भजनोपदेशकों का अद्भुत समागम

## दिनांक : शुक्रवार 1 जनवरी, 2016 से रविवार 3 जनवरी, 2016 तक

## स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम ग्राम टिटौली, जिला–रोहतक, हरियाणा

## भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का सम्मेलन आयोजित

## देश के विभिन्न प्रान्तों से सैकड़ों आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं

**इस ऐतिहासिक अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में पधारकर आर्यजन कार्यक्रम का आनन्द लें। ऐसा अवसर आपके जीवन में दुबारा नहीं आयेगा जब इतनी संख्या में आर्य भजनोपदेशक एकत्रित हों और उनका कार्यक्रम सुनने को मिले।**

सर्व सज्जनों को सूचित करते हुए हमें अत्यधिक हर्ष हो रहा है कि आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में समर्पित भाव से कार्य कर रहे समस्त आर्य भजनोपदेशक एवं आर्यभजनोपदेशिकाओं के संगठन भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का महत्त्वपूर्ण सम्मेलन 1 जनवरी, 2016 से 3 जनवरी, 2016 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा) में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व स्वामी इन्द्रवेश फाऊण्डेशन के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन में सैकड़ों आर्य भजनोपदेशक भाग लेंगे तथा तीनों दिन भजनों का शानदार कार्यक्रम चलता रहेगा। यह सम्मेलन आर्य भजनोपदेशकों का अद्भुत समागम होगा और आपको इतनी बड़ी संख्या में आर्य भजनोपदेशकों को पहली बार देखने व सुनने का अवसर मिलेगा। इस अवसर पर वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशकों को सम्मानित भी किया जायेगा। अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम का आनन्द लें।

**नोटःस्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम पहुंचने के लिए माता दरवाजा या जीन्द बाईपास रोहतक से टिटौली के लिए बस एवं टैम्पो हर समय मिलते हैं। आश्रम टिटौली से खिडवाली रोड पर स्थित है।**

### निवेदक

| सत्यपाल मधुर | कैलाश कर्मठ | नरेशदत्त आर्य | ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य | प्रवेश आर्या | आचार्य सन्तराम |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रधान | मंत्री | कोषाध्यक्ष | संयोजक | व्यवस्थापक | स्वागताध्यक्ष |
| भा.आ.भ. परिषद् | भा.आ.भ. परिषद् | भा.आ.भ. परिषद् | | | |

**स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)**

दूरभाष :– 0–9354840454, 01262–286999, 286900

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

# ईश्वर की रचना और उपासना

—प्रेमप्रकाश वानप्रस्थ

१. रचयिता की रचना एक अद्भुत कमाल है। संसार में हम सब एक नियम देखते हैं कि कोई वस्तु बिना बनाये नहीं बनती। ये सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश समुद्रों की गहराई और पर्वतों की ऊँचाई, ये सब देख कर यह मानना ही पड़ता है कि इन सब का कोई बनाने वाला है, जिसे ईश्वर कहते हैं, क्योंकि वह ऐश्वर्यों का दाता व निर्माता है, इसी गुण के आधार पर उसका "ईश्वर" नाम हुआ। अन्यथा उसका मुख्य नाम "ओ३म्" है।

**कुछ लोग ईश्वर को नहीं मानते**

२. सृष्टि में जो वस्तु बनती है, वह अवश्य बिगड़ती है। जो जन्मता है वह अवश्य मरता है। जमीन घूमती है, जिससे दिन रात्रि बनते हैं। वृक्षों पर फल फूल लगने लगते हैं, परन्तु जो फल जहाँ लगना चाहिये वहीं लगा है, बेर, लीची, अंगूर, अमरूद आदि ऊपर लगे हैं, और बड़े–बड़े पेठे, तरबूज आदि नीचे लगे हैं, क्योंकि यदि ऐसा न होता तो थोड़ी सी तेज वायु चलने पर कोई तरबूज पेठा टूट कर नीचे गिर जाता तो मनुष्य का सिर फट जाता। इन नियमों को जो नियन्त्रण कर रहा है, उसे ईश्वर कहते हैं।

**ईश्वर कण-कण में व्यापक है**

३. भगवान् कोई ऐसा सेठ नहीं, जो सृष्टि बनाकर कहीं चला गया हो। वह निराकार होने से कण–कण में व्यापक है। इसीलिए सारी सृष्टि उसके नियम का पालन कर रही है। यदि वह सब वस्तुओं में व्यापता नहीं होता तो सारे नियम बिगड़ जाते। सृष्टि के आदि में बने मनुष्य, पशु, पक्षी, जलचर और फल, फूल आदि आज भी वैसे ही हैं, जैसे सृष्टि के आदि में बने थे। उसमें कोई अन्तर नहीं आया और न ही किसी व्यवस्था में खराबी आई। यही उसकी व्यापकता का सब से बड़ा प्रमाण है परन्तु मनुष्य की बनाई सब चीजें इसीलिए खराब होती हैं क्योंकि वह वस्तुओं में व्यापक नहीं।

**रचना में अन्तर**

४. इस विशाल सृष्टि की रचना करके भगवान् ने कमाल किया है। सृष्टि के सारे मनुष्य मिलकर भी एक चाँद नहीं बना सकते, परन्तु मानव ने भी अपनी रचना में कमाल किया है, जैसे वर्तमान में सुविधाएँ टेलीफोन, टी.वी., वायुयान, राकेट आदि गर्मी में बर्फ, सर्दी में हीटर बड़े–बड़े समुद्री जहाज और आजकल कम्प्यूटर ने तो ऐसा कमाल किया, लोगों को आश्चर्य में डाल दिया है, परन्तु भगवान् की रचना और मनुष्य की रचना में एक मौलिक अन्तर है। भगवान् ने जिन वस्तुओं की मनुष्य को आवश्यकता है, उन वस्तुओं में ही उन वस्तुओं को पैदा करने की शक्ति प्रदान कर दी, जैसे गेहूँ का दाना, सैकड़ों गेहूँ के दाने पैदा कर सकता है, एक आम हजारों आम पैदा कर सकता है, मनुष्य मनुष्य पैदा कर सकता है, गाय गाय पैदा कर सकती है, आदि–आदि। परन्तु मनुष्य का बनाया रेल का इंजन अपने जैसा रेल का इंजन पैदा नहीं कर सकता, घड़ी घड़ी पैदा नहीं कर सकती और सूई अपने जैसी सूई भी नहीं बना सकती।

**रचना में विशेषता**

५. भगवान् के नियमों को जानकर मनुष्य ने रचना तो की है। जैसे कुर्सी, मेज, कार, रेल का इंजन, वायुयान आदि–आदि बनाये, परन्तु कुर्सी की लकड़ी को नहीं बनाया, लोहे को नहीं बनाया, रुई को नहीं बनाया, कोयले को नहीं बनाया, अग्नि को नहीं बनाया, जल को नहीं बनाया, पैट्रोल को नहीं बनाया परन्तु रेल के इंजन को चलाया। इसी लिए महर्षि दयानन्द जी महाराज आर्यसमाज के प्रथम नियम में कहते हैं कि "सब सत्य विद्या और जो प्रदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।" फिर मनुष्य सब वस्तुएँ दिन में या लाईट में ही बनाता है, फिर भी बहुत भूल हो जाती हैं। परन्तु भगवान् सब काम अन्धेरे ही में करते हैं, फिर भी कहीं भूल नहीं हो सकती। यही रचना में विशेषता है।

**क्या ईश्वर साकार है ?**

६. नहीं, क्योंकि जो वस्तु बनी या जन्मी है, वह अवश्य बिगड़ेगी। साकार पदार्थ सीमित होता है, परन्तु भगवान् तो सर्वव्यापक है, सर्वव्यापक निराकार ही हो सकता है। भगवान् विशाल है, अतः उसकी विशालता उसकी रचना में भी झलकती है। जैसे धरती ने किसी को अन्न देने से इन्कार नहीं किया, उसके जल ने किसी को जीवन देने से इन्कार नहीं किया, उसकी वायु ने किसी को प्राण देने से इन्कार नहीं किया, उसके सूर्य ने किसी को प्रकाश देने से इन्कार नहीं किया। उस व्यापक एवं विशाल को साकार कहकर, हम उसे छोटा करने का अपराध करते हैं। वह महान् है, उसकी रचना में महानता झलकती है और छलकती है। उस महान् का सब कुछ महान् है क्योंकि वह निराकार है।

**ईश्वर, जीव, प्रकृति**

७. ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि होने से कई सृष्टि को भी ईश्वर मान लेते हैं। लोहार ट्रंक पेटी को बनाता है, लोहे को नहीं। हलवाई मिठाई को बनाता है, अन्न घी खाण्ड को नहीं। अतः समझ लेना चाहिए कि सृष्टि में तीन पदार्थ अनादि हैं, जिन्हें ईश्वर जीव और प्रकृति कहते हैं। जिसने वस्तुओं को बनाया वह ईश्वर है, जिससे बनाया,वह प्रकृति है, जिसके लिए बनाया वह जीव है। मानो हलवाई "ईश्वर है, अन्न, घृत खाण्ड "प्रकृति" है और खाने वाले "जीव" हैं। हमारा शरीर प्रकृति है, जिसके लिए बना 'जीव" है और जिसने बनाया "ईश्वर" है। जैसे भगवान् ने सूर्य को बनाया, जिससे बनाया वह प्रकृति (परमाणु) है जिसके, लिए बनाया, वह "जीव" है। "बनी वस्तु जहां बनाने वाले का पता देती है, वहां यह भी बताती है कि इसका कोई उपयोग करने वाला भी है। अतः तीन पदार्थों को अनादि मानना सार्वजनिक सार्वकालिक सत्य है।"

**मनुष्य सृष्टिकर्त्ता नहीं हो सकता**

८. इस युग में ऐसे लोगों की कमी नहीं, जो ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता नहीं मानते, वे मनुष्यों को ही भगवान् माने बैठे हैं। वे कहते हैं सृष्टि अपने आप बन गई, परन्तु जो बनती है वह अवश्य बिगड़ती है। जड़ वस्तु एक ही काम कर सकती है, या तो बनती ही रहे या बिगड़ती ही रहे। विपरीत गुण होने का मतलब किसी का हस्तक्षेप है, उसे ही ईश्वर कहते है, जो निर्माण गति और संहार करता है। एक युवक ने कहा कि जब भगवान् निराकार हैं तो उसके हाथ पांव हो ही नहीं सकते परन्तु संसार में सब कार्य हाथ पांव आदि से ही होते हैं, अतः ईश्वर है ही नहीं। मैंने कहा बेटा यदि पांव और हाथ के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता तो तुम जब भोजन करते हो तो उसका रस शरीर में बनता है, खून बनता है, हड्डी आदि बनते हैं, बताओ किस हाथ पांव से काम लिया ? कौन–सा बिजली का बटन दबाया ? दिन रात श्वास चलता है, बताओ तुम इसमें क्या करते हो? मनुष्य यदि कुछ कर सकता होता तो किसी को मरने ही न देता। बेटा हाथ पांव से शरीर के बाहर के कार्य होते हैं, जैसे बाल्टी को उठाना, कपड़े धोना, चलना आदि–आदि परन्तु शरीर के अन्दर के कार्य "आत्मा" सब बिना हाथ पांव के अर्थात् बिना किसी सहायता के कर सकता है। वैसे ही ईश्वर सर्वव्यापक होने से, कोई भी पदार्थ उससे बाहर न होने के कारण, सारी सृष्टि का कार्य बिना हाथ पांव के कर लेता है।

**ध्यान कैसे करें ?**

९. प्रायः लोग प्रश्न किया करते है कि जब कोई वस्तु सामने ही नहीं है तो ध्यान कैसे करें? कई लोगों ने ध्यान करने के लिए मूर्तियाँ बनाईं, परन्तु मूर्तियें में ध्यान हो ही नहीं सकता, क्योंकि जो पदार्थ सामने होता है, उसका ध्यान नहीं दर्शन होता है। ध्यान उसका ही होता है, जो निराकार है। बच्चे जब पाठ भूल जाते हैं तो अध्यापक कहा करते हैं, बेटा ! ध्यान करो, क्योंकि शब्द की शक्ल नहीं होती। मूर्तिपूजा करने वालों को भी जब अन्दर से आनन्द आने लगता है, आंखें बन्द कर लेते हैं, क्योंकि ईश्वर का विषय आंखों का नहीं, "आत्मा" का है। अतः ईश्वर का विषय भौतिक नहीं, आध्यात्मिक है, अतः ईश्वर की अनुभूति आत्मा से ही हो सकती है।

**ध्यान कहां करें**

१०. कई लोग ध्यान के स्थान पर पूजा भी करते हैं। परन्तु ध्यान रखें, पूजा माता पिता, गुरु, अतिथि, गाय आदि की हुआ करती है, क्योंकि पूजा का अर्थ पूजा होती है बाहर से और उपासना होती है अन्दर से। अतः प्रभु का मन्दिर (आत्मा का निवास स्थान) हृदय देश ही है। अतः भगवान् कृष्ण गीता १८–७१ में कहते हैं, "ईश्वरः सर्वभूतानाम् हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति।" इसलिए ईश्वर का मिलन वहीं होगा, जहां आत्मा भी हो। ध्यान का स्थान हृद्देश अर्थात् हृदय से ब्रह्मरन्ध्र तक कहा गया है। अतः ध्यान भी यहीं करें।

**ध्यान क्यों करें ?**

११. *क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अच्छा* बनना चाहता है "यश" चाहता है। जैसी संगत वैसी रंगत। यह एक मौलिक सच्चाई है कि हम यदि फूल वाले की दुकान पर ही जायें तो सुगन्ध से भर जायेंगे। ठीक इसी प्रकार भक्ति से जीवन में सुगन्ध आती है। भगवान् से प्यार करने वाले सब के प्यारे होते हैं। भगवान् की संगत से, उसकी प्रेरणा, से, उसकी कृपा से मनुष्य "पवित्र" होकर गुणों से भर जाता है। "पवित्रता" जीवन का मूल और भक्ति–जीवन का फूल है। अतः ध्यान करें, और फूल बनें।

१२. भक्ति पवित्र होकर नित्य करनी चाहिये, क्योंकि भगवान् नित्य और पवित्र है, अतः नित्य का नित्य से ही मिलन हो सकता है। समझने की बात यह है कि आत्मा और परमात्मा में विशेष अन्तर है। आत्मा अल्पज्ञ और परमात्मा सर्वज्ञ है, आत्मा पुरुष और परमात्मा पुरुषोत्तम हैं, आत्मा ससीम और परमात्मा असीम हैं। यह गणना नहीं हो सकती। अन्त में यही कहना है कि आत्मा है "आनन्द" का भिखारी, और परमात्मा हैं आनन्द के भण्डारी।

**—आर्यकुटि, धूरी १४८०२४, (पंजाब-भारत)**


## वैदिक नित्यकर्म विधि

**लेखक एवं सम्पादक – आचार्य श्री पं. हरिदेव आर्य, एम. ए.**

इस पुस्तक में प्रातःकाल के मन्त्र, संध्या, ईश्वरस्तुति, प्रार्थनामंत्र, दैनिकयज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियां, अमावस्या-पूर्णिमा आदि के विशेष मंत्र, ईश्वर प्रार्थना, पचास भजन संग्रह आदि-के अतिरिक्त जन्मदिन, वर्षगांठ, सगाई, गोद भरना, वर तथा बारात का स्वागत, व्यापार का शुभारम्भ, भवन-शिलान्यास, क्रिया सम्बन्धी (उठाला), यात्रा गमन, शुद्धि संस्कार पद्धति, यजुर्वेद के ४०वें अध्याय से युक्त। विशेष बात यह है कि सब मंत्र मोटे और लाल, सभी मंत्र अर्थ सहित और कविता पाठ में भी और प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में ओ३म् भी मुद्रित है। 23x36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या 176, मूल्य एक प्रति 100 रुपये है। डाक व्यय अलग होगा।

**पुस्तक प्राप्ति स्थान**

**मधुर प्रकाशन - 2804, गली आर्य समाज बाजार सीताराम, दिल्ली-110006**

**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**

**3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2**

**दूरभाष :- 011-23238631,**

# जीवन में संस्कारों का महत्त्व

– आचार्य विश्वेन्द्र आर्य

उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से संस्कार शब्द बनता है। मानव जीवन को उच्च दिव्य एवं महान बनाने के लिए वैदिक संस्कारों का विशेष महत्त्व है। मानव की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त 16 संस्कारों को करने का विधान हमारे ऋषि–महर्षियों ने वेदाज्ञा के अनुसार किया है।

'संस्क्रियते अलंक्रियते अनेन इति संस्कार' अर्थात् जिससे शरीर, मन एवं आत्मा अलंकृत, सुशोभित या परिष्कृत होते हैं, उत्तम और श्रेष्ठ होते हैं उसे संस्कार कहते हैं।

आज संस्कारों के अभाव में ही मानव पशु से भी निम्नतर स्तर को प्राप्त होता चला जा रहा है। उसने अपने मानवता रूप धर्म का परित्याग कर दिया है। स्वधर्म को त्याग करके अर्थ को प्राप्त करने में अपना सब कुछ न्यौछावर कर रहा है। उसकी धन के प्रति अतृप्त लालसा भाई को भाई, पिता को पिता, बहन को बहन नहीं समझ रही है, परिवार टूट रहे हैं।

आज एक दूसरे के लिए स्वप्राणों को भी न्यौछावर करने वाले राम, लक्ष्मण, भरत जैसे भाई श्रवण कुमार के समान मातृ–पितृ भक्त, भीष्म के समान दृढ़ प्रतिज्ञ, हरिश्चन्द्र जैसा सत्यनिष्ठ, दयानन्द जैसा त्यागी, तपस्वी, समाज सुधारक एवं अखण्ड ब्रह्मचारी दूर–दूर तक दृष्टिगोचर नहीं हो रहे हैं।

मानव को सुखी बनाने के लिए अनेकों प्रकार के भौतिक साधनों को उपलब्ध कराया जा रहा है, क्योंकि आज के मानव की दृष्टि केवल भौतिक उन्नति तक ही सीमित रह गयी है। हम भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण समझ बैठे हैं कि मानव का सबसे बड़ा प्रश्न रोटी का प्रश्न है। यदि रोटी का प्रश्न हल हो गया तो सभी समस्याओं का समाधान हो गया। लेकिन भोजन, आजीविका एवं भौतिक साधन प्राप्त कर लेने पर भी संस्कारों के अभाव में व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता ये शाश्वत सत्य है। संस्कारवान व्यक्ति भौतिक साधनों के अभाव में भी स्वयं को सुखी अनुभव करता है, क्योंकि संस्कारों के द्वारा ही 'शरीर, मन एवं आत्मा उत्तम बनते हैं।' (स.प्र.स्व.म.प्र.) नया पैरा किसी वस्तु के पुराने स्वरूप को बदलकर उसे नवीन स्वरूप संस्कारों के द्वारा ही प्रदान किया जाता है। महर्षि चरक लिखते हैं 'संस्कारों हि गुणान्तराधान मुच्यते' अर्थात् पहले से विद्यमान दुर्गुणों एवं दोषों को हटाकर उनके स्थान पर सद्गुणों के आधान करने को संस्कार कहते हैं। जिससे कि उसका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम बने तथा मन में पवित्र भावना हो और सत्कर्मों को करके शारीरिक एवं आत्मिक उन्नति करता हुआ शरीर मन और आत्मा को सद्गुणों से अलंकृत करे।

जब बालक का जन्म होता है तब वह दो प्रकार के संस्कार अपने साथ लेकर के आता है, एक तो वे संस्कार हैं जिन्हें वह जन्म–जन्मान्तरों से अपने साथ लाता है और दूसरे वे हैं जिनको अपने माता–पिता से संस्कारों के रूप में वंश परम्परा से प्राप्त करता है, ये अच्छे भी हो सकते हैं और बुरे भी हो सकते हैं।

वैदिक संस्कार मानव निर्माण की एक उत्तम योजना है। इस योजना में बालक को इस प्रकार के वातावरण से घेर दिया जाता है जिससे केवल अच्छे संस्कारों के पनपने का ही अवसर मिलता है, बुरे संस्कार चाहे पिछले हों या इस जन्म के हों अथवा माता, पिता या मित्रों से प्राप्त हुए हों उन्हें निर्वीज कर दिया जाता है।

जिस प्रकार सोना, चाँदी, लोहा आदि धातुओं को अग्नि में डाल देने से उनकी अशुद्धता नष्ट होकर वे शुद्ध एवं निर्मल हो जाते हैं, ठीक इसी प्रकार से वैदिक संस्कारों के माध्यम से बालक–बालिका के विगत जन्मों के अशुभ कर्मों के वासना रूपी दोषों को दूर कर दिया जाता है और उन्हें सद्गुणों से युक्त कर दिया जाता है जिससे कि वह मानव जीवन के मुख्य लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर सके।

जीवात्मा जन्म–जन्मान्तरों में अनेकों प्रक्रियाओं से गुजरता है। प्रत्येक जन्म में इस पर अच्छे या बुरे संस्कार पड़ते हैं वैदिक संस्कृति में आत्मा के पूर्वजन्मों के अशुभ संस्कारों को शुभ संस्कारों के प्रभाव द्वारा समाप्त किया जाता है। जिस समय एवं जिस क्षण भी जीवात्मा मानव शरीर के बन्धन में बंधता है उसी समय से और उसी क्षण से वैदिक संस्कृति उस पर उत्तम संस्कार डालना आरम्भ कर देती है और जीवात्मा जब तक उस मानव शरीर में विद्यमान रहता है तब तक उस पर श्रेष्ठ संस्कार निरन्तर डाले जाते हैं। क्योंकि जिन संस्कारों का प्रभाव उस जीवात्मा पर अधिक होगा वह उसी प्रकार का आगे आचरण करेगा। उसके पूर्व जन्म–जन्मान्तरों के संस्कार यदि अशुभ हैं तो उनको शुभ संस्कारों के अत्यधिक प्रभाव से दबा दिया जाता है।

उदाहरण के लिए दूब घास के तिनकों में अपनी गंध है लेकिन केसर की गन्ध की अपेक्षा से कम है। यदि दोनों को एक साथ रख दिया जाता है तो दूब घास स्वयं की गन्ध कम होने के कारण केसर की गन्ध को ग्रहण कर लेती है और दूब से भी केसर की ही गन्ध आने लगती है। इसी प्रकार केसर की गन्ध कम है प्याज की गन्ध की अपेक्षा से यदि कुछ दिनों केसर एवं प्याज को एक साथ रख दिया जाता है तो केसर की गन्ध दब जाती है और उसमें से भी प्याज की गन्ध आने लगती हैं। तो पता चला जिसका अधिक प्रभाव है वह कम प्रभाव वालों पर स्वयं का प्रभाव डालने में समर्थ होता है।

इसी प्रकार से पूर्वजन्मों के अशुभ संस्कारों को भी वैदिक संस्कारों की अधिकता के कारण उन्हें निर्वीज कर दिया जाता है। अतः श्रेष्ठ संस्कारों का प्रभाव मानव के जीवन पर्यन्त उसकी आत्मा पर विद्यमान रहता है।

जन्म से तो सभी शूद्र होते हैं लेकिन (संस्कारवाद द्विज उच्यते) संस्कारों के द्वारा ही मनुष्य द्विज अर्थात् ब्राह्मण एवं वैश्य कहलाने का अधिकारी बनता है।

महर्षि प्रवर देव दयानन्द लिखते हैं – 'जिस करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं और संतान अत्यन्त योग्य होते हैं। इसलिए संस्कारों का करना अति उचित है।' (सं.वि. भूमिका)

अतः स्पष्ट है कि संस्कारों के द्वारा ही शरीर, मन एवं आत्मा उत्तम बनते हैं और जब शरीर, मन एवं आत्मा उत्तम बन जायेंगे तो संतानों को भी अत्यन्त योग्य बनाया जा सकता है और जीवन के सर्वोपरि लक्ष्य मोक्ष सुख को भी प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए सम्पूर्ण मानव जाति का परम कर्त्तव्य है कि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त स्वयं को उत्तम संस्कारों से घेरे रखे क्योंकि संस्कारों से ही जीवन उच्च, दिव्य एवं महान बनता है।

– **आर्य समाज कमला नगर, आगरा (उ. प्र.), मो.:–9719154615, 9690624239**

# *Through Remembrances*

*B.R. Sharma Vibhakar*

**Dr. Radha Krishanan**

In September dated on 5th of this month The date of birth of Sarvapalli Dr. Radha Krishanan is celebrated as Teacher's Day. In schools, colleges and other institutions lectures are delivered showing the importance of the Guru in the life of society.

As we know very well that Dr. Radha Krishanan was a great learned scholar who imparted education imbibed into the philosophical norms. Really he was a renowned philosopher of the world with high thinking but living so simple. This is the Aryan tone of living style. He rose from low to the highest post of President of India. Above all he was a great teacher.

**Maharishi Vishva Karma**

On 16th and 17th of the month of September every year we remember the contribution of Maharishi Vishva Karma as an apostle of shilp or technology. He was the father of Vastu-Science and Sthapatya Kala. He invented 'Pushpak Vimaan' (referred in Ramayan by Rishi Valmiki) an unique plane which can fly in the sky, run on the land and float in the sea.

Apart from it he brought about the necessary parts of the Yajan-Kriya in the form of Havan Kund, Yajya Vedi, Yajya Saamagri and yajya-patras (Shruva etc.). This was his unique innovation in the world of Yajan-Performances. Mahrishi Daya Nand Saraswati recommended Vishva Karma-maya-Twasta's books to be included in the syllabus for practical Knowledge. He firmly advocated - 'Learning is competent when it is put into the Practical channels. He quotes in his famous book entitled 'Sanskar Vidhi' the purposeful practical learnings.

Maharishi Vishva Karma was one of the founders of Vedic cult, culture and the civilization. On 17th sept. every year he is widely remembered in every factory, institution because of shilpic, Economical and cultural values in the society. This is all what means the advancement of the country in the light of the shilpic cult and Technology. It is a day for labourers, Technicians and Engineers to uplift the nation. We understand by it : work is worship.

**'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक छपकर तैयार**

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

# स्वामी श्रद्धानन्द व पं. रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान स्मृति में
# कन्या भ्रूण हत्या, अन्धविश्वास व नशाखोरी के विरुद्ध

स्वामी दयानन्द सरस्वती

## प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जीन्द (हरियाणा)

स्वामी इन्द्रवेश

**दिनांक 13 दिसम्बर, 2015 (रविवार) प्रातः 10 बजे**

**महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम 3705 अर्बन एस्टेट, जीन्द (हरियाणा)**

**अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश जी,** प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

**मुख्य वक्ता एवं अतिथि :** स्वामी ओमवेश जी पूर्व मन्त्री, उत्तर प्रदेश, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली, स्वामी चन्द्रवेश जी (टिटौली), स्वामी श्रद्धानन्द (पलवल), स्वामी विजयवेश जी (गुड़गांव), श्री सत्यव्रत सामवेदी (कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक सभा), प्रो. विट्ठलराव आर्य, मंत्री सार्वदेशिक सभा, राजकुमार गुप्ता एडवोकेट (चण्डीगढ़), चौ. हरिसिंह सैनी (पूर्व मंत्री हरियाणा), श्री बिरजानन्द एडवोकेट, प्रो. श्योराज सिंह (महामंत्री बंधुआ मुक्ति मोर्चा), बहन पूनम आर्या (प्रधान बेटी बचाओ अभियान), प्रवेश आर्या (संयोजक बेटी बचाओ अभियान), जगमति मलिक आर्या (कैथल), श्री रामलाल आर्य (गुड़गांव), चौ. मेलाराम आर्य (दिवाल), श्री लक्ष्मीचन्द आर्य (फरीदाबाद), चौ. सूबे सिंह (पूर्व एस. डी. एम.), श्री राममोहन राय एडवोकेट (पानीपत), प्रिं. आजाद सिंह आर्य, श्री मोहित आर्य (यमुनानगर), श्री इन्द्रजीत आर्य (नरवाना), श्री जगदीश सींवर (सिरसा), श्री दर्शन सिंह आर्य (प्रधान जाट कालेज कैथल), श्री जयपाल मलिक (नेहरू युवा केन्द्र), प्रो. यशवीर शास्त्री (खरकाली), श्री सन्तराम आर्य।

**भजनोपदेशक :** श्री सहदेव बेधड़क, कुलदीप आर्य (बिजनौर), श्री सुखवीर शास्त्री, श्री हवासिंह तुफान

**संयोजक : स्वामी रामवेश जी,** प्रधान, नशाबन्दी परिषद्, हरियाणा

**निवेदक**

सर्वश्री मा. सतवीर आर्य, रणवीर रेढू एडवोकेट, कर्ण सिंह रेढू, ठाकुर तेलू सिंह, भौम सिंह आर्य, मा. जगदीश आर्य, सहदेव शास्त्री, धूलाराम आर्य, डॉ. राजपाल आर्य, धर्मवीर आर्य (सरपंच), देवेन्द्र आर्य, सूरजमल आर्य, वीरेन्द्र आर्य, नरेश आर्य, मा. मोहन लाल आर्य, मा. राजवीर आर्य, दयाकिशन आर्य, देवराज शास्त्री, सौदागर चन्द आर्य, कर्मपाल आर्य, दयानन्द अहिरका, सूरजमल पहलवान, मा. इन्द्रसिंह, सुबेर सिंह, जसवन्त आर्य, जिले सिंह आर्य, सतपाल आर्य, विजय आर्य, रघुवीर सिंह मलिक, मा. राधूराम, वजीर सिंह आर्य, सत्या आर्या, पृथ्वी सिंह चहल, मांगेराम आर्य, डॉ. बलवीर सिंह आर्य, सूर्यदेव आर्य, विद्यासागर शास्त्री, डॉ. राजेन्द्र यादव, जगफूल ढिल्लो, मा. बलवीर आर्य, जौरा सिंह हुड्डा, मा. सुलतान सिंह, सत्यदेव शास्त्री आदि।

**महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम, 3705 अर्बन स्टेट, जीन्द (हरियाणा)**

**दूरभाष :- 01681-248638, 9416148278**

---

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

## ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के शुभ अवसर पर
## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

**ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित**
**अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ**

# सत्यार्थ प्रकाश

लागत मूल्य 80/- रुपये

**100 प्रति लेने पर मात्र**
**40 रुपये में दिया जायेगा**

भारी छूट पर उपलब्ध

**10 से अधिक प्रति लेने पर 50 रुपये में दिया जायेगा**

23 गुणा 36 के 16वें साईज तथा पेपर वैक जिल्द में आकर्षक टाइटल के साथ बढ़िया कागज पर प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध

**-: प्रकाशक :-**

**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002**

# पौराणिक पण्डित माधवाचार्य से मेरा शास्त्रार्थ

**- वेद मार्तण्ड डॉ. महावीर मीमासक**

24 जून, 1953-54 की बात है। स्थान ग्राम-धनौन्दा, जिला-महेन्द्रगढ़ (वर्तमान हरियाणा)। उन दिनों मैं गुरुकुल झज्जर (वर्तमान हरियाणा में पढ़ता था। पौराणिक पं. माधवाचार्य ने आर्य समाज को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। पं. माधवाचार्य कमलानगर, देहली में रहते थे और उन दिनों पंजाब का हरियाणा से विभाजन नहीं हुआ था। अत: पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा में वर्तमान हरियाणा और दिल्ली सम्मिलित थे। अत: पं. माधवाचार्य का आर्य समाज को शास्त्रार्थ का यह चैलेन्ज सीधा पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा पर आक्रमण था। पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस चैलेन्ज को पूरी सिंह गर्जना के साथ स्वीकार किया। अब पं. माधवाचार्य ने दूसरा पैंतरा बदला और शर्त रखी कि शास्त्रार्थ केवल संस्कृत भाषा में होगा क्योंकि पं. माधवाचार्य यह भली-भांति जानते थे आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी पण्डित भी संस्कृत में उतनी गति नहीं रखते जितनी शास्त्रार्थ में विजेता वक्ता की होनी चाहिए। अब पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों को चिन्ता हुई कि संस्कृत में शास्त्रार्थ करने के लिए किसका नाम प्रस्तुत किया जाये? क्योंकि आर्य समाज में पं. शान्ति प्रकाश जैसे धाकड़ शास्त्रार्थ महारथी तो थे परन्तु उनकी संस्कृत में उतनी गति नहीं थी कि धारा प्रवाह बोल सकें।

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा में उन दिनों पं. जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती और आचार्य भगवान देव, गुरुकुल झज्जर (स्वामी ओमानन्द जी) भी होते थे, अत: इस समस्या की बात उन तक भी आई। मैं (लेखक) उन दिनों गुरुकुल झज्जर में पढ़ता था और धारा प्रवाह महाकवि बाणभट्ट की शैली से संस्कृत बोलता था, इस तथ्य को पं. जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती और आचार्य भगवान देव जी जानते थे और साक्षात् देखते तथा सुनते थे। अत: उन्होंने सभा के दूसरे अधिकारियों को मेरे नाम का सुझाव दिया और सभी की सहमति से यह निश्चय हुआ कि गुरुकुल झज्जर के ब्र. महावीर (लेखक) पं. माधवाचार्य से शास्त्रार्थ करेंगे और शास्त्रार्थ महारथी पं. शान्ति प्रकाश जी जो उन दिनों पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के पंडित थे, वे ब्र. महावीर की आवश्यकता होने पर सहायता करेंगे। मुझसे पूछा गया तो मैं तो सदैव ऐसे कार्यों के लिए तैयार रहता था क्योंकि गुरुकुल के वार्षिकोत्सवों पर इस प्रकार के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए मैं ही जाना जाता था। मैं सहर्ष तैयार था। उस समय मेरी आयु 19 से 20 वर्ष थी। निश्चित सन् याद नहीं है।

एक दिन पहले मुझे गुरुकुल से धनौन्दा गांव ले जाया गया। मुझे वहां ढाणी में रखा गया। ढाणी वहां की स्थानीय भाषा में उसे कहा जाता था जो केवल पुरुषों के रहने-ठहरने का स्थान होता था और उसे पूलों की बाड़ से कच्ची छत डाल बनाया जाता था। पं. शान्ति प्रकाश जी वहां पहले ही पहुंच चुके थे।

अगले दिन 24 जून को शास्त्रार्थ होना था। शास्त्रार्थ के लिए गांव की चौपाल को चुना गया। एक तरफ मैं आसन पर बैठ गया, आसन चौपाल के चबूतरे पर लगाया गया था। मेरे पीछे आदरणीय पं. शान्ति प्रकाश जी बैठ गये। शास्त्रार्थ महारथी पं. शांति प्रकाश जी के बैठने से मुझे बहुत ही प्रोत्साहन और हौंसला मिला। मेरे बायें तरफ गुरुकुल झज्जर से लाई गई आवश्यक पुस्तकों का ढेर रख दिया गया, ताकि प्रमाण की आवश्यकता पड़ने पर तत् सम्बद्ध पुस्तक से उसे दिखाया जा सके। मेरे समक्ष पं. माधवाचार्य जी बैठे थे उनकी सहायतार्थ उनका नवयुवक पुत्र पं. प्रेमाचार्य बैठा था और हमारी तरफ हमारे पक्ष के दर्शक और समर्थक बैठ गये और पं. माधवाचार्य की तरफ उनके समर्थक और दर्शक बैठ गये।

शास्त्रार्थ का विषय वेदों में ईश्वर की मूर्ति पूजा (वेदषु ईश्वरस्य मूर्ति पूजा) था। शास्त्रार्थ की रणनीति मैंने बना ली थी। ईश्वर के निराकार होने के वेदों से अनेक प्रमाण मैंने उपस्थित कर लिये थे, जब ईश्वर निराकार है तो उसकी मूर्ति कैसी और उसकी मूर्ति के अभाव में उसकी मूर्ति की पूजा कैसी? इसके अतिरिक्त संस्कृत भाषा में भी पं. माधवाचार्य को घेरने की मैंने सोच बना ली थी।

शास्त्रार्थ का मण्डनात्मक पक्ष (वेदों में मूर्ति पूजा) क्योंकि पं. माधवाचार्य का था अत: हमने उन्हें ही अपने पक्ष में पहले बोलने को कहा। हमारा तो क्योंकि खण्डनात्मक विपक्ष था, अत: हम बाद में पक्ष का खण्डन करेंगे। अत: पं. माधवाचार्य पहले बोलें। हमने उनके पक्ष के खण्डनात्मक विपक्ष में वेद से अनेक मन्त्र ईश्वर के निराकार होने के समर्थन में प्रस्तुत किये। माधवाचार्य कोई उत्तर नहीं दे पाये। दो बिन्दुओं पर पं. माधवाचार्य घिरे। पहला बिन्दु था कि मैंने पं. माधवाचार्य से संस्कृत में पूछा कि "न तस्य प्रतिमा। अस्ति इति मन्त्राश भवान् प्रमिणोति वान वेति?" प्रमिणोति शब्द सुनकर पं. माधवाचार्य घबराये, वे इस शब्द का अर्थ नहीं समझ पाये और पास में बैठे हुए दूसरे पण्डित से पूछने लगे कि यह ब्रह्मचारी क्या कह रहा है? मंत्रांश तो था ही स्पष्ट उनके पक्ष के विरुद्ध प्रमाण। दूसरा बिन्दु था कि पं माधवाचार्य अद्यतन भूतकाल में संस्कृत शब्दों का लङ्लकार में प्रयोग कर रहा था जबकि पाणिनी की अष्टाध्यायी के अनुसार अद्यतन भूतकाल में लुङ्लकार का प्रयोग होना चाहिए, लङ्लकार का प्रयोग अनद्यतन प्रत्यक्ष भूतकाल में ही होना चाहिए। मैं अद्यतन भूत में लुङ्लकार का ही प्रयोग करता था और यङ्न्त शब्दों की प्रसंगानुसार भरमार कर देता था। पं. माधवाचार्य न तो समझ पाते थे और न ही मेरे आक्षेपात्मक प्रश्नों का उत्तर दे पाते थे। अत्यन्त संक्षेप में मैंने यहां यह लिखा है। व्याकरण की गुत्थियों को सामान्य पाठक नहीं समझ पायेंगे और न ही लिख रहा। पं. माधवाचार्य अन्त में अपने समर्थकों को संकेत देकर उठ कर चले गये। हम अपने स्थान पर जमे रहे। हमारे समर्थकों ने जयकार के नारों से वातावरण गुंजायमान कर दिया। पं. शांति प्रकाश जी ने पीछे से मेरी पीठ थपकी, उनको किसी प्रकार के बोलने की नौबत ही मैंने नहीं आने दी। सभा की पत्रिका में उन दिनों यह समाचार कई बार छपा। कई जिज्ञासुओं ने मुझे इस विषय की प्रामाणिक जानकारी देने को कहा अत: यह लेख लिखा है।

श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने शास्त्रार्थ महारथी पं. शांति प्रकाश जी का जीवन चरित्र छपवाया था। उसमें उन्होंने यह घटना सही रूप में नहीं दी, तिथियां तो पूर्णत: गलत दी हैं। मैंने उनको जब पत्र द्वारा इसकी सही जानकारी दी तो उन्होंने बड़े विनीत भाव से क्षमा मांगी और पुस्तक के अगले संस्करण में इसे ठीक करने की बात लिखी। पता नहीं ठीक किया या नहीं। फिर भी प्रामाणिक खोज किये बिना एक इतिहास लेखक की भयंकर भूल तो यह माननी पड़ेगी। गुरुकुल झज्जर के लिए उस समय यह बहुत बड़ी गौरवमयी उपलब्धि थी।

-भू. पू. संस्थापक एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक,
मो.:-9811960640

# अत्यन्त गुणकारी फल 'अमरूद'

**- मधुर प्रकाश शास्त्री**

शीत ऋतु में बहुतायत और अन्य फलों से सस्ता मिलने वाला अमरुद अत्यन्त गुणकारी और पौष्टिक फल है। अमरूद में प्रति सौ ग्राम में 299 मिलीग्राम विटामिन 'सी' होता है। अमरूद के खाने से 66 कैलोरी ऊर्जा केवल 100 ग्राम मात्रा में मिलती है। आयुर्वेद चिकित्सकों के अनुसार अमरूद मधुर, अम्ल, कषाय, स्निग्ध, शीत वीर्य, वातपित्त शामक होता है। अमरूद विरेचक होने के साथ पाचन क्रिया भी तीव्र करता है। भोजन से पहले अमरूद खाने से अतिसार (दस्त) में बहुत लाभ होता है। उन्माद, वात, पित्त, मूर्च्छा, कृमि, तृष्णा और विषम ज्वर में भी बहुत लाभ पहुंचाता है। विटामिन 'सी' की अधिक मात्रा होने के कारण अमरूद शीतऋतु में अधिक शक्तिवर्धक होता है।

रासायनिक विश्लेषण - अमरूद में प्रोटीन 1.5 वसा 0.2, खनिज तत्त्व 0.9, कार्बोहाइड्रेट 14.5, कैल्शियम 1.01, फास्फोरस 0.44, लोहा 1.0 मिली. प्रति ग्राम, विटामिन 'बी' 0.2 तथा विटामिन 'सी' 2.95 मिग्रा. पाये जाते हैं।

सूर्योदय से पहले कच्चे अमरूद को किसी पत्थर पर घिसकर लेप करने से शीघ्र सिर शूल नष्ट होता है।

इलाहाबादी अमरूद पाव भर सुबह भोजन के बाद तथा इतनी ही मात्रा में सायं 6 सप्ताह तक खाने से मस्तिष्क की मांसपेशियों को शक्ति प्राप्त होती है तथा मस्तिष्क की गरमी शान्त होती है।

अमरूद और मधु मिलाकर सेवन करने से हृदय, मस्तिष्क और पाचन क्रिया की विकृतियाँ नष्ट होती है।

उष्ण राख में अमरूद को भून कर खाने से कफ में शीघ्र लाभ होता है। कफ भी सरलता से निकल जाता है।

अमरूद का कुछ दिनों तक सेवन करने से अर्श (बवासीर) रोग में बहुत लाभ होता है।

अमरूद को सोंठ, काली मिर्च और सैंधा नमक साथ खाने से पाचन क्रिया तीव्र होती है। पेट का अफारा और गैस विकृति भी नष्ट होती है।

भोजन के बाद कुछ दिनों तक अमरूद के सेवन से पित्त वृद्धि से उत्पन्न शारीरिक जलन से मुक्ति मिलती है।

अमरूद वृक्ष की छाल का क्वाथ (काढ़ा) बनाकर फिटकरी मिलाकर कुल्ले करने से दांतों का दर्द नष्ट होता है।

अमरूद को काटकर काली मिर्च, नमक और नींबू का रस डालकर खाने से मस्तिष्क को शक्ति मिलती है। स्मरणशक्ति तीव्र होती है उन्माद भी नष्ट होता है।

अमरूद के कोमल पत्तों के रस में कत्था मिलाकर इस्तेमाल करने से मुंह के छाले शीघ्र नष्ट होते हैं।

अमरूद के कोमल पत्तों के 10 ग्राम रस में शर्करा मिलाकर सेवन करने से अजीर्ण रोग नष्ट होने से भूख अधिक लगती है।

अमरूद की कोमल पत्तियाँ जल के साथ पीसकर, फिर जल में मिलाकर पीने से आम बात में बहुत लाभ होता है।

अमरूद खाने से भांग का नशा नष्ट होता है।

स्वास्थ्य चर्चा

# एसिडिटी का कारण और निवारण

– वैद्य शुचि मित्रा

वैसे तो अम्लपित्त रोग कोई गम्भीर रोग नहीं है, पर रोग के गम्भीर कारणों की वजह से लोग हमेशा के लिए इस रोग के रोगी बन जाया करते हैं। अम्लपित्त (Acidity) रोग को एसिड डिस्पेपसिया, एसिड गेस्ट्राइटिस और हाइपर क्लोरहाइड्रिया के नाम से भी जाना जाता है। इस रोग का इतिहास बहुत ही पुराना है। वैसे तो आयुर्वेद के ग्रन्थ चरक संहिता व सुश्रुत संहिता में अम्लपित्त रोग का स्पष्ट रूप से जिक्र नहीं है। इस रोग का जिक्र, आयुर्वेदिक सबसे पहले अपनी संहिता में आचार्य कश्यप ने किया था। इसके पश्चात् अपने ग्रन्थ 'माधव निदान' में माधवाकार ने एक स्वतन्त्र रोग के रूप में अम्लपित्त रोग का पूर्ण रूप से व्याख्या किया है। लगातार बासी व तामसिक भोजन खाने से शरीर में बहुत ज्यादा अम्ल तथा पित्त का निर्माण होता है। इसी को अम्लपित्त कहते हैं। बदलती ऋतुओं से इस रोग का सीधा सम्बन्ध है। शरद् ऋतु और वर्षा ऋतु में यह रोग ज्यादा पैर पसारता है। इस रोग में रोगी के आमाशय में अम्ल और पित्त का निर्माण बहुत ज्यादा होने लगता है, जो इस रोग के जनक बन जाया करते हैं। तब गैस्ट्रिकम्यूकोसा में उत्तेजना पैदा होती है, जिससे हाइपर एसिडिटी का शरीर में निर्माण होता है। कई बार रोग की अवस्था में उचित उपचार न कराने की वजह से रोगी गैस्ट्रिक और ड्यूडिनल अल्सर का शिकार बन जाया करता है। रोग की गम्भीर अवस्था में रोगी को कैंसर भी हो सकता है।

### लक्षण

- अम्लपित्त रोगी को थकान रहने लगती है।
- रोगी को पेट में भारीपन का एहसास होता रहता है।
- रोगी को उबकाई आती है। उसकी उबकाई में पीला, नीला, हरा या लाल रंग का पित्त निकलता है।
- रोगी को भोजन से अरुचि सी हो जाया करती है। उसे डकार आती रहती है।
- रोगी के पेट, छाती और गले में जलन रहने लगती है।
- रोगी के मुँह का स्वाद कसैला व कड़वा रहने लगता है। रोगी के मुँह में अम्लपित्त की वजह से छाले हो जाया करते हैं।
- रोगी के दांत भी खट्टे रहने लगते हैं।
- भूखा पेट रहने पर रोगी को जलन का एहसास होता है और भोजन कर लेने के पश्चात् जलन में कुछ वक्त के सिर आराम-सा पड़ जाया करता है।
- रोगी को सही नींद नहीं आती है, जिससे वह हर वक्त टेंशन में रहने लगता है।
- रोगी की जीभ पर मैला पदार्थ जम जाया करता है। रोगी को गैस की प्रॉब्लम रहने लगती है। जिससे उसे अफारा, पेटदर्द और पेट फूलने की समस्या का सामना करना पड़ता है।
- रोगी के हाथ-पैरों आंखों व तलवों में जलन रहने लगती है।
- रोगी को मल-मूत्र त्यागते वक्त भी जलन की अनुभूति होती है।
- इस रोग के रोगी को बार-बार थूकने की आदत बन जाया करती है। रोगी की नाक से गर्म-गर्म सांसे निकलती हैं और उनके गुदा मार्ग से भी तीखी खट्टी और दुर्गन्ध युक्त गैसों का विसर्जन होता रहता है।

### कारण

- गलत खान-पान से भी यह रोग शरीर में पनपता है।
- शराब, धूम्रपान व तम्बाकू के ज्यादा सेवन से यह रोग होता है।
- तले भुने व ज्यादा चटपटे खाद्य पदार्थों के सेवन से भी यह रोग शरीर में अपनी पैठ बनाने में सफल होता है।
- ब्रेड, जैम, जैली, फास्ट फूड, कोल्ड ड्रिंक्स आदि के सेवन से भी यह रोग होता है।
- चाय, कॉफी, बिस्कुट व ज्यादा चीनी के प्रयोग से भी यह रोग उत्पन्न होता है।
- चिन्ता व मानसिक तनाव भी इस रोग को शरीर में पैदा करते हैं।
- खट्टे खाद्य पदार्थों, सिरका, खट्टी दही, खट्टी छाछ के सैवन से भी शरीर में अम्लपित्त रोग पैदा हो जाया करता है।
- ज्यादा मात्रा में बेसन व मैदा से बने खाद्य पदार्थों के सेवन से भी अम्लपित्त रोग हो जाया करता है।
- कम मात्रा में पानी पीने से और ज्यादा उपवास व्रत रखने से भी व्यक्ति इस रोग का शिकार हो जाया करता है।
- चॉकलेट, कुल्फी, डिब्बा बन्द खाद्य पदार्थ, क्रीम, आईस्क्रीम, टॉफियाँ रोज ज्यादा मात्रा में खाने से भी अम्लपित्त रोग होता है।
- पॉलिश किया चावल खाने से भी यह रोग हो जाया करता है।
- बिना चोकर के बारीक पिसे आटे की रोटियाँ खाने से भी यह रोग सताने लगता है।
- आजकल लोग एलोपैथिक दवाओं और एंटीबायोटिक दवाओं का खूब सेवन करते हैं। इस तरह की दवाओं के ज्यादा सेवन से भोजन नलिका और आमाशय पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, जिससे व्यक्ति की आंतों में सूजन आ जाती है, घाव हो जाता है और शरीर में अम्ल ज्यादा बनने लगता है।
- जल्दी बिना चलाये भोजन से भी शरीर में अम्लपित्त रोग पैदा होता है।
- महिलाओं में गर्भाशय के दौरान यह रोग देखा गया है।
- अजीर्ण, पुरानी पेचिश, पुराने कब्ज, मन्दाग्नि, संग्रहणी, आमाशय में सूजन, आंतों में सूजन होने की वजह से भी आम्लपित्त रोग सता सकता है।
- दांतों के रोग, आंतों के रोग, पायरिया, लीवर की खराबी, तिल्ली की खराबी भी इस रोग को पैदा करती है।
- दूषित पानी पीने से भी यह रोग फैलता है।
- ठण्डे गर्म खाद्य पदार्थों का एक-दूसरे के ऊपर सेवन कर लेने से भी अम्लपित्त रोग हो जाता है।

### जड़ी-बूटियों से रोग निवारण।

- त्रिफला या आंवले के चूर्ण में शहद मिलाकर चाटने से अम्लपित्त रोग ठीक हो जाता है।
- हरड़ के चूर्ण में थोड़ा सा शहद मिलाकर चाटना चाहिए।
- अम्लपित्त रोग होने पर रोगी के शरीर में कई तरह के विकार पैदा हो जाया करते हैं। इन विकारों से छुटकारा पाने के लिए काली मिर्च सौंठ और नीम की छाल को मिलाकर बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को सुबह शाम एक चम्मच की मात्रा में ताजे पानी से लेने से फायदा होता है।
- अगर इस रोग की वजह से पेट में दर्द की अनुभूति होती हो तो पीपल के वृक्ष की छाल का काढ़ा बनाकर पीने से पेटदर्द में आराम मिलता है। काढ़े में गुड़ और सेंधा नमक डालना न भूलें।
- ताजा आंवले के गुदे में बारीक पिसी हुई मिश्री मिलाकर रखनी चाहिए।
- मुनक्का 10 ग्राम और सौंफ आधी मात्रा में लेकर दोनों को 100 मिली. पानी में भिगो दें। सुबह मसलकर छानकर पीने से अम्लपित्त में लाभ होता है।
- दाख, हरड़, बराबर-बराबर लें। इसमें दोनों में बराबर शक्कर मिला लें। सबको पीसकर एक-एक ग्राम की गोली बना लेने से अम्लपित्त, हृदय कंठ की प्यास, मन्दाग्नि का शमन होता है।
- पकी निबौली के तीन-चार दाने खाने से मन्दाग्नि में फायदा होता है।
- धनिया, सोंठ, शक्कर और नीम की सींक 6-6 ग्राम की मात्रा में लें। इसका क्वाथ बनाकर सुबह शाम पीने से पित्त की जलन, खट्टी डकारें, अपचन, ज्यादा प्यास मिटती है। पित्त स्वर में भी इसका सेवन लाभ पहुँचाता है।
- त्रिफला चूर्ण आधा चम्मच की मात्रा में दिन में दो-तीन बार पानी के साथ फांकने से एसिडिटी में लाभ होता है।

### घरेलू उपचार

- ककड़ी या खीरे को बिना नमक के साथ खाने से अम्लपित्त रोगी ठीक होता है। ककड़ी या खीरा खाने के बाद पानी नहीं पीना चाहिए।
- अगर वायु विकार की समस्या हो और खट्टी डकारें आ रही हों तो दो आलू आग में भून लें। इसमें जीरा, काली मिर्च, थोड़ा सा सेंधानमक मिला लें। अब इसमें थोड़ा सा नींबू का रस मिलाकर इसका सेवन करें।
- गाय के दूध में गुड़ मिलाकर पीने से खूब खुलकर पेशाब आयेगा जिससे अम्लता मिटने के साथ-साथ गर्मी व जलन भी मिट जायेगी।
- गुड़ के साथ जीरे का चूर्ण लेना चाहिए।
- धनिया और अदरक को बराबर की मात्रा में लेकर पानी के साथ सेवन करने से रोग में फायदा होता है।
- एसिडिटी की समस्या हो तो नारियल का पानी पीना चाहिए।
- काली मिर्च की चटनी के साथ काले चनों को खाना चाहिए।
- प्याज के रस में नींबू का रस मिला लें। इसके सेवन से पेशाब की जलन मिटती है।

(योग सन्देश से साभार)

# आर्य समाज की गतिविधियाँ

## काशी आर्य समाज में स्वामी दयानन्द के ऐतिहासिक काशी शास्त्रार्थ का 146वाँ स्मृति दिवस

## दयानन्द ने सनातन तत्वज्ञान से भटके लोगों को रास्ता दिखाया

## इस्लाम के विद्वान काफिर, कुफ्र और जेहाद की पुर्नव्याख्या करें

स्वामी दयानन्द जी ने 19वीं शती में वेद और वेदानुकूल मत को पुर्नप्रतिष्ठित कर नवीन वैदिक क्रांति का शंखनाद किया तथा सनातन तत्व ज्ञान से भटके लोगों को रास्ता दिखाया, उन्होंने विभिन्न सम्प्रदाय, मजहबों और पंथों में व्याप्त पाखण्ड और अज्ञानता को खारिज कर उनकी कथित धार्मिक दार्शनिक देसनाओं पर बहस की चुनौती देते हुए सवालों की झड़ी लगा दी उक्त विचार दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 146वें स्मृति दिवस पर सोमवार को आयोजित संगोष्ठी में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश भारती ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

मुख्य वक्ता मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल की आचार्या डॉ. गायत्री आर्या ने कहा कि आतंकवाद के मूल में धर्मान्धता है। आज की नई परिस्थिति में इस्लाम के श्रेष्ठ विद्वानों को काफिर, कुफ्र और जेहाद की पुर्नव्याख्या करनी चाहिए जिससे दहसत समाप्त हो और सर्वधर्म समभाव बढ़े।

काशी आर्य विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने पौराणिक सम्प्रदायों के साथ जैन, बौद्ध, बाईबिल तथा कुरान द्वारा प्रतिपादित मतों की समीक्षा अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में की है जिसकी वजह से लोगों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ी और व्याख्याओं में सुधार आया।

पूर्व सभासद लीलाराम सचदेवा ने कहा कि दयानन्द और आर्य समाज के शास्त्रार्थ आन्दोलन से सामाजिक सुधारों को बल मिला तथा दलितों को मन्दिरों में प्रवेश मिलने लगा।

अध्यक्षीय सम्बोधन में श्री श्रीनाथ सिंह पटेल ने कहा कि जब देश पाश्चात्य विद्वानों की वेद विषयक भ्रान्त धारणाओं से आक्रान्त था उस समय दयानन्द सरस्वती ने वेद ज्ञान की महानता का बोध कराया।

इस अवसर पर सर्वश्री प्रकाश नारायण शास्त्री, डॉ. विशाल सिंह, हरिहर प्रसाद सेठ, मोतीलाल आर्य, ब्रजभूषण सिंह, श्रीमती निर्मला सिंह, श्री रमेश जी आर्य, हेमा आर्य, विभा आर्य आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का आरम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ, श्रीनाथ सिंह यजमान थे। मोतीलाल आर्य ने यज्ञ कराया। अतिथियों का स्वागत डॉ. विशाल सिंह कोषाध्यक्ष ने किया, संचालन प्रकाश नारायण शास्त्री ने तथा धन्यवाद प्रकाश बृजभूषण सिंह ने किया। लक्ष्मी आर्य ने शांति पाठ किया।

– श्री प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री

## भारतीय संस्कृति रक्षा अभियान

दिनांक 9 से 17 अक्टूबर, 2015 तक स्वामी चेतनानन्द जी व स्वामी धर्मानन्द जी द्वारा वैदिक धर्म प्रचार वाहन, आर्य समाज कौंकेरा मथुरा से 9 दिन का अभियान जिला भरतपुर के 9 ग्रामों में चलाया गया। इस अभियान में श्री ओमप्रकाश आर्य उपप्रधान आर्य प्रति. सभा राजस्थान एवं श्री वीरेन्द्र सिंह आर्य गुनसारा वालों का विशेष सहयोग रहा। ग्रामों की सूची जिनमें प्रचार कार्य चलाया निम्न प्रकार हैं – गुनसारा, तालफरा, नगला इन्दू, सूरौता, पला, जयचौली, वछामदी, जघीना, नगला चिन्ता आदि ग्रामों में कार्यक्रम रहा लोगों ने कार्यक्रम चलाते रहने का परामर्श दिया।

इसी परिप्रेक्ष्य में दूसरी यात्रा दिनांक 31 अक्टूबर से 12 नवम्बर, 2015 तक विभिन्न ग्रामों जाटचौली, विलौंठी, भरतपुर जिला, जयपुर से होती हुई गई जिसमें श्री प्रहलाद सिंह विकासनगर वालों के सहयोग से 12 परिवारों में यज्ञ के आयोजन हुए और लुनियावास, आदर्शनगर, जगतपुरा आदि स्थानों पर सभायें की गई। मुख्य आकर्षण का कार्यक्रम श्री डॉ. जलसिंह अस्थमा विशेषज्ञ गैनोर जयपुर, डॉ. एस. के. चौहान गैनोर, जयुपर, श्री सुरशचन्द्र शर्मा विकासनगर, जयपुर, श्री सुभाष सिंह कुमावत विकासनगर जयपुर, श्री ओमदेव गुप्ता जी हैलमिटवाले रहे।

अभियान के अन्तर्गत गोहत्या, कन्या भ्रूण हत्या, नशाबन्दी, दहेजप्रथा आदि विषयों के साथ यज्ञ महिमा पर विशेष ध्यान दिलाया गया। लोगों ने कार्यक्रम को पसन्द किया और कार्यक्रम चलाते रहने का का अनुरोध किया।

## विदेशी मत में गये 256 ईसाइयों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

ओडिशा एवं झारखण्ड के सीमावर्ती आदिवासी बहुल सुन्दरगढ़ जिले के इन्दरपुर गांव में 256 ईसाई स्त्री पुरुषों ने यज्ञ में आहुति देकर विधिपूर्वक वैदिक धर्म को ग्रहण किया यह कार्यक्रम उत्कल आर्य सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती एवं पं. विशिकेशन जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर आस–पास के हजारों श्रद्धालु जन इन्हें आशीर्वाद देने पधारे थे।

– आचार्य रणजीत विवित्सु, कार्यालय सचिव

## गुरुकुल आश्रम का गौरव

प्रसिद्ध आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के अनथक परिश्रम एवं तप, त्याग से अब आर्य समाज के गुरुकुलों में गुरुकुल आश्रम आमसेना का प्रमुख स्थान है। इस गुरुकुल के छात्रों के सर्वविध विकास के लिए विशेष प्रयत्न किया जाता है। फलस्वरूप यहाँ के ब्रह्मचारी बौद्धिक एवं शारीरिक विकास में आगे रहते हैं।

ओडिशा के प्रान्तीय कुश्ती दंगल में गुरुकुल के तीन ब्रह्मचारी ब्र. लोकेश्वर आर्य एवं ब्र. हृषिकेश आर्य ने 65 किलो वजन में क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया ब्र. बलदेव आर्य ने 75 किलो वजन में तृतीय स्थान प्राप्त किया।.

इसी प्रकार भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की ओर से ओडिशा प्रान्तीय शास्त्र प्रतियोगिता पुरी में आयोजित प्रतियोगिता में महाभाष्य में ब्र. स्वराज आर्य, धातुरूप में ब्र. मित्रभानु आर्य अष्टाध्यायी कण्ठस्थीकरण में ब्र. रुपेश आर्य ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस प्रकार इस शास्त्र प्रतियोगिता में गुरुकुल के होनहार तीनों ब्रह्मचारियों ने प्रथम स्थान प्राप्त करके गुरुकुल का गौरव बढ़ाया। – आचार्य मनुदेव वाग्मी, प्रबन्धक

## आर्य समाज अन्धेरी (प.) मुम्बई का 29वाँ वार्षिक समारोह

आर्य समाज मंदिर अन्धेरी (प.) मुम्बई का 29वाँ वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक 24 से 27 दिसम्बर, 2015 तक मनाया जायेगा। इस अवसर पर विश्वशांति एवं पर्यावरण की शुद्धि के लिए 21 कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान वेद प्रवक्ता आचार्य श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय होंगे।

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया (राजस्थान की कन्याओं द्वारा वेदपाठ एवं सुप्रसिद्ध सुमधुर गायक श्री विजय आनन्द जी (फिरोजपुर) के भक्ति संगीत का आनन्द आपको प्राप्त होगा। जो सज्जन इस यज्ञ में यजमान बनना चाहें वे अपने नाम आर्य समाज अंधेरी के कार्यालय में स्वयं पधार कर अथवा दूरभाष नं. –26393895 पर भी लिखवा सकते हैं।

यज्ञ नित्य प्रति प्रातः 7 बजे आरम्भ होगा। यजमान अपना स्थान 6.45 तक अवश्य ग्रहण कर लें।

– हरीश आर्य, प्रधान


वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

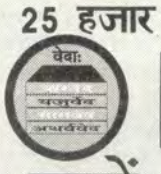

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है
10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 ... 5, नई दिल्ली–110002

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [ U (c)-289/2015-17 ]

# गौवंश को बचाने के लिए आर्यजन आगे आयें

प्रतिष्ठा में :–

ड. नग

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दिल्ली चलो!! ओ३म् दिल्ली चलो!!

## 16 दिसम्बर, 2015 को भारी संख्या में दिल्ली पहुंचें

## जन्तर–मन्तर रोड, नई दिल्ली में

## आर्य समाज का

गोहत्या एवं गोमांस निर्यात तथा कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे के विवादित बयान कि आर्य बाहर से आये हुए हैं के विरुद्ध

# विशाल धरना एवं प्रदर्शन

## समय प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक

**भारत में गोवंश तथा समस्त पशुधन की रक्षा की मांग को लेकर तथा गोमांस निर्यात एवं कांग्रेस नेता श्री खड़गे द्वारा दिए गये बयान कि "आर्य भारत के मूल निवासी नहीं हैं" के विरुद्ध सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आगामी 16 दिसम्बर, 2015 (बुधवार) को प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक जन्तर–मन्तर रोड, नई दिल्ली पर विशाल धरना एवं प्रदर्शन आयोजित किया जा रहा है।**

**सभी गोवंश प्रेमियों व आर्यों से प्रार्थना है कि दल–बल सहित अपने झण्डे व बैनर लेकर धरना स्थल पर ठीक समय पर पहुंच कर शक्ति का प्रदर्शन करें एवं गोमाता की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हों।**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **स्वामी आर्यवेश** | **अनिल आर्य** | **प्रो. विट्ठलराव आर्य** | **पं. माया प्रकाश त्यागी** | **सत्यव्रत सामवेदी** |
| सभा प्रधान | संयोजक,उपप्रधान सभा | सभा मंत्री | कोषाध्यक्ष | कार्यकारी प्रधान |
| **वैद्य इन्द्रदेव** | **प्रेमपाल शास्त्री** | **मधुर प्रकाश शास्त्री** | **रामकुमार सिंह आर्य** | **महेन्द्र भाई** |
| उपप्रधान | उपप्रधान | उपमंत्री | प्रभारी, के.आ.यु. परिषद् | राष्ट्रीय महामंत्री,के.आ.यु.परिषद् |

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली, दूरभाष नं.:–011–23274771, 23260985

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

# प्रवाह से बचें

य ईं चकार न सो अस्य वेद य ईं ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात्।
स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश।।

–ऋ० १/१६४/३२; अथर्व० ६/१०/१०

**ऋषिः–दीर्घतमा।। देवता–विश्वेदेवा।। छन्दः–त्रिष्टुप्।।**

**विनय**–मनुष्य संसार–सागर में डूबता जाता है। मनुष्य ज्यों–ज्यों 'बहुप्रजा' होता जाता है त्यों–त्यों यह 'निर्ऋति' में–घोर कष्ट में–पड़ता जाता है। विषय–ग्रस्त हुआ मनुष्य इस संसार में एक ही कार्य समझता है, अपने बच्चे पैदा करना, एवं प्रकृति में अपने विस्तार को नाना प्रकार बढ़ाता जाता है। इसीलिए वह बार–बार जन्म पाता है, बार–बार जन्म के घोर कष्टों को अनुभव करता है। ऋषि लोगों ने देखा है कि माता की योनि में आये हुए, जीव को बार–बार बड़ा भारी मानसिक क्लेश भोगना पड़ता है। उस समय वह जीव केवल झिल्ली से ढका हुआ नहीं होता, किन्तु घोर अज्ञान से भी ढका हुआ होता है, क्योंकि 'बहुप्रजाः' के मार्ग पर जाना अज्ञान से ढके जाने से ही होता हे। मनुष्य 'ढका हुआ' (परिवीत) होने से ही इस संसार में पागल तथा अन्धे की भाँति रहता है। मनुष्य पागल इसलिए है, क्योंकि वह जो दिन–रात अन्धाधुन्ध काम करता है उस वह जानता नहीं, यूँ ही करता जाता है। मनुष्य खाना–पीना, चलना–फिरना, प्रेम करना, द्वेष करना आदि जो कुछ करता है उसे वह कुछ भी नहीं जानता कि मैं यह क्या कर रहा हूँ, क्यों कर रहा हूँ, इसका क्या प्रभाव होगा। वह नहीं जानता कि इसका ही फल उसे भोगना होगा। वह नहीं जान पाता कि पहले जन्मों में वह न जाने क्या–क्या कर चुका है। अन्धाधुन्ध वह करता जाता है। इसी प्रकार का उसका सब संसार को देखना है। संसार में वह मनुष्य स्त्री, पशु, पहाड़, नदी, आकाश, सभा, समाज, बड़े–बड़े आनन्ददायक दृश्य और बड़े–बड़े रुलाने वाले दृश्य, इन सबको सोते–जागते देखता जाता है, परन्तु वास्तव में वह इन किन्हीं भी वस्तुओं को नहीं देखता। ये सब वस्तुएँ उससे वास्तव में छिपी ही रहती हैं, निःसन्देह छिपी ही रहती हैं। वह देखता हुआ भी किसी भी वस्तु का तत्व नहीं देख पाता। इसीलिए वह 'बहुप्रजाः' होने के प्रकृति में ग्रस्त होने के मार्ग का अवलम्बन करता है और 'निर्ऋति' में पड़ता जाता है। निर्ऋति (पृथिवी) के इस अन्धकार में धंसते जाने की जगह, मनुष्य 'द्यौः' के प्रकाश की ओर जाने लगे, यदि वह इस संसार में जो कुछ करे उसे जानने लगे और जो कुछ देखे उसे साक्षात् करने लगे तभी उसका कल्याण है।

**शब्दार्थ**–**यः**=यह मनुष्य **ईम्**=यह जो कुछ **चकार**=करता है **अस्य**=इस किये को **सः न वेद**=वह नहीं जानता। **यः**=वह मनुष्य **ईं ददर्श**=यह जो कुछ देखता है वह **तस्मात्**=उस देखने वाले मनुष्य से **नु हिरुक् इत्**=निःसन्देह छिपा हुआ ही है। **सः**=ऐसा वह मनुष्य **मातुः योना अन्तः**=माता के गर्भाशय में **परिवीतः**=(झिल्ली से और अज्ञान से) ढका हुआ **बहुप्रजाः**=बार–बार जन्म लेता हुआ और बच्चे पैदा करता हुआ **निर्ऋतिम् आविवेश**=बड़े घोर कष्ट में प्रविष्ट होता जांता है।

साभार-'वैदिक विनय' से

आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।